B.A. Part-II Philosophy (H) paper-III

नैतिक मापदण्ड के रूप में बाह्य नियम (External laws as a moral Standard)

By. Dr. R.N. Sharma, Dept. of Phil. J.M.S. College Munger

नीतिशास्त्र मानवीय आचरण का एक विज्ञान है। मानवीय आचरण पर उचित या अनुचित, नैतिक या अनैतिक निर्णय देना ही नीतिशास्त्र का विषय है। जहाँ भी किसी तरह का निर्णय दिया जाता है, उसके लिए एक मापदंड या कसौटी चाहिए। जब सोनार सोने पर खरा या खोटे का निर्णय देता है तो उसके सामने कसौटी होती है। दूध का जबर्न शुद्ध या मिश्रित का निर्णय देते हैं तो वहाँ भी एक मापदंड है- लैक्टोमीटर। न्यायाधीश भी जब कोई निर्णय देता है तो उसके सामने भी एक मापदंड रहता है। ठीक उसी तरह नीतिशास्त्र भी मानवीय आचरण पर निर्णय देता है कि व्यक्ति का कर्म उचित है या अनुचित, आचरण और व्यवहार नैतिक है या अनैतिक। जब से मनुष्य सभ्य हुआ उसने ऐसा निर्णय देना शुरू किया। ऐसे निर्णय के लिए भी एक मापदंड चाहिए।

हर क्षेत्र के आरम्भ में मनुष्य अपने से शक्तिशाली बाह्य सत्ता को निर्णायक मान लेता है। चाहे वह समाज का क्षेत्र हो, धर्म का क्षेत्र हो, राजनैतिक क्षेत्र हो या नैतिकता का क्षेत्र हो। हमने देखा कि समाज के क्षेत्र में शुरू में समाज के सबसे धनीमानी व्यक्ति को निर्णायक के रूप में स्वीकार किया। राजनैतिक क्षेत्र में राजा को निर्णायक माना और सारी प्रजा ने उनके निर्णय को अंतिम निर्णय माना। धर्म के क्षेत्र में भी बाहरी मूर्तियों को भगवान माना। ठीक उसी तरह नैतिकता के क्षेत्र में भी तीन बाहरी निर्णयों को मापदंड के रूप में स्वीकार किया। ये तीनों नियम इसप्रकार हैं— 1. सामाजिक नियम (Social Laws)
2. राजनैतिक नियम (Political Laws)
3. धार्मिक नियम (Religious Laws)

1. **सामाजिक नियम** - हर समाज में कुछ न कुछ नियम बना रहता है और उस सामाजिक नियम को आँख बंद कर मानते चले आ रहे हैं। सामाजिक नियम, पुरानी परम्परा एवं रीति-रिवाज पर आधारित रहता है। समाज में एक व्यवस्था बनाये रखने के लिए सामाजिक नियम बनता है। यदि मनुष्य का आचरण सामाजिक नियम के अनुसार होता था तो उसके कर्म को नैतिक और उचित कहा जाता था और मनुष्य का कर्म तथा आचरण सामाजिक नियम के विरुद्ध होता था तो उसके कर्म को अनुचित और अनैतिक करार दिया जाता था। आज भी कुछ अंशों में ये मापदंड का काम करता है। अर्थात् यदि हमारा कर्म सामाजिक नियम के अनुसार होता है तो हमारे कर्म को समाज वाले उचित कहते हैं। यदि हमने अपने व्यवहार में सामाजिक नियम का उल्लंघन कर दिया तो समाज वाले हमारे कर्म को अनुचित कहेंगे। इस प्रकार सामाजिक नियम मानवीय आचरण पर उचित और अनुचित निर्णय देने के लिए पहला मापदंड बना। सामाजिक नियम को हम आँख बंद कर इसलिए मानते चले आ रहे हैं कि विरोध नहीं करने पर पारितोषिक का लोभ और विरोध करने पर दंड का भय छिपा रहता है। यदि हमारा कर्म सामाजिक नियम के अनुसार होता रहा तो समाज वाले हमें इज्जत, प्रतिष्ठा एवं सम्मान देंगे। समाज में हमें सुविधा का स्थान मिल सकता है। समाज में हम सम्मानित व्यक्ति के रूप में माने जायेंगे। यही लोभ हमें सामाजिक नियम को मानने के लिए बाध्य करता रहता है। साथ ही साथ सामाजिक नियम का उल्लंघन

Scanned with CamScanner

इसलिए नहीं करते क्योंकि दंड का भी भय छिपा रहता है। समाज से हम निकाल दिये जायेंगे। पान-पान बंद हो जायेगा, शादी-ब्याह रुक जायेगी। यही दंड का भय सामाजिक नियम के उल्लंघन करने से हमें रोकता है। इसतरह सामाजिक नियम मानवीय आचरण पर उचित और अनुचित का निर्णय देने के लिए मापदंड का काम करता है। इस संबंध में Bain (बेन) महोदय का कहना है कि "नैतिकता एक सामाजिक संस्था है, जिसका संरक्षण समाज की शक्ति और दंड द्वारा होता है।" हीम इसी तरह डॉ० स्टीफेन (Dr. Stephen) भी मानते हैं कि "कुछ भी स्वतः उचित या अनुचित नहीं, किन्तु सामाजिक नियम तथा परिवेश द्वारा ही ऐसा होता है।" ("Nothing is right or wrong in itself, but only by social rule and environment.")

2. राजनैतिक नियम - जिस तरह से हर समाज में सामाजिक नियम बना रहता है, ठीक उसीप्रकार हर समाज में सरकारी नियम बने रहते हैं, और वे भी नियम राजनैतिक नियम कहे जाते हैं। राजनैतिक नियम इसलिए बनता है कि देश भर में एक व्यवस्था बनी रहे, शांति और अमन-चैन कायम रहे। राजनैतिक नियम भी मानवीय आचरण का एक निर्णायक नियम बन जाता है। इसके अनुसार यदि मनुष्य का आचरण राजनैतिक नियम के अनुसार होता है, तो उसे उचित, नैतिक और ठीक कहा जायेगा। लेकिन यदि मनुष्य का व्यवहार सरकारी नियम के खिलाफ, राजनैतिक नियम के विरुद्ध हो गया तो वैसे आचरण को अनुचित, अनैतिक और अशोभन कहा जायेगा। राजनैतिक नियम को भी हम इसलिए और बंद कर मानते हैं कि यहाँ भी पारितोषिक का लोभ और दंड का भय रहता है। पारितोषिक का लोभ इस रूप में कि यदि हमारा व्यवहार राजनैतिक नियम के अनुसार हो रहा है तो सरकार की ओर से आदर और सम्मान मिलेगा। सरकार के हम वफादार माने जायेंगे। अंग्रेजों के समय में जो सरकार की ओर से रहता था, उसे 'रायबहादुर' की उपाधि मिलती थी। आज भी सरकारी आदमी को पद्मविभूषण, देशरत्न, परमवीरचक्र आदि के अलंकार से अलंकृत किया जाता है। यही लोग हमें राजनैतिक नियम को मानने के लिए बाध्य करता रहता है। राजनैतिक नियम का उल्लंघन हम करना नहीं चाहते, इसलिए कि हमें दंड का भय लगा रहता है। यदि हमने सरकार के नियम का उल्लंघन किया तो हमें जेल की हवा खानी पड़ेगी, फाँसी के तख्ते से झूलना होगा और आजीवन कारावास में रहना होगा। यही सब भय हमें राजनैतिक नियम का उल्लंघन करने से बचा पाता है। इसतरह राजनैतिक नियम भी मानव के आचरण पर उचित और अनुचित के निर्णय देने का एक मापदंड बन जाता है। यदि हमारा आचरण इस नियम के अनुसार रहा तो हमारे आचरण को उचित कहा जायेगा। और यदि हमारा आचरण राजनैतिक नियम के विरुद्ध रहा तो उस आचरण को अनुचित और अनैतिक कहा जायेगा। ठीक इसी तरह हॉब्स (Hobbes), बेन (Bain) आदि विचारक राज्य के नियमों को ही नैतिक मापदंड मानते हैं। राज्य द्वारा स्वीकृत नियम ही नैतिकता की कसौटी है। यदि व्यक्ति के कार्य इन नियमों के अनुकूल हैं, तो वे उचित और यदि प्रतिकूल हैं, तो अनुचित कहे जा सकते हैं।

3. धार्मिक नियम - जिसतरह हर समाज में सामाजिक एवं राजनैतिक नियम रहते हैं, उसीतरह हर राज्य में धार्मिक नियम बने रहते हैं। धार्मिक नियम मानना हमारे लिए आवश्यक हो जाता है। परन्तु जो धर्मनिरपेक्ष राज्य हैं, वहाँ सभी व्यक्तियों को एक ही धर्म मानने की बाध्यता नहीं है। वे अपनी आस्था और विश्वास के आधार पर धर्म का चयन

कर सकते हैं। इसमें राज्य दबाव नहीं डाल सकता है। परन्तु फिर भी मनुष्य को किसी न किसी
धर्म से बंधे रहना पड़ता है। धार्मिक भावना का उदय मनुष्य की अपूर्णता के भाव से होता है।
अपने को अपूर्ण समझकर ही मनुष्य एक असीम, सर्वशक्तिमान सत्ता में विश्वास करने लगता है।
धर्म का केन्द्र बिन्दु ईश्वर है। धर्म का क्षेत्र नैतिकता की अपेक्षा अधिक व्यापक है। धर्म से ही
नैतिकता का जन्म होता है। इस मत के समर्थक देकार्त (Descartes), लॉक (Locke), डन्स
स्कोटस (Duns Scotus) आदि विचारक हैं। इन के अनुसार धार्मिक नियम ही नैतिक
नियम है। ईश्वर धर्म का आदर्श माना गया है और इसी ईश्वर की इच्छा पर शुभ और
अशुभ (good and evil), उचित और अनुचित (Proper and improper), नैतिक और
अनैतिक (moral and immoral) निर्भर है। ईश्वर अपनी इच्छाओं का पालन
पुरस्कार का प्रलोभन और दंड का भय दिखाकर मनुष्यों से करवाता है।
हर धर्म के धार्मिक नियम ईश्वर के साक्षात्कृति माने जाते हैं।
धार्मिक नियम भी हमारे नैतिकता के निर्णय में एक मापदण्ड का काम करता है। धार्मिक
नियम में पारितोषिक का लोभ और दंड का भय छिपा रहता है। लोभ इस रूप में कि यदि
हमारा आचरण धार्मिक नियमों के अनुसार होता है तो हमें बाद में चलकर स्वर्ग का सुख
मिलेगा। यही स्वर्ग के सुख की लालसा हमें धार्मिक नियमों को मानने के लिए बाध्य
करता रहता है। दंड का भय इस रूप में भी यदि हमारा आचरण धार्मिक नियम के
विरुद्ध होता है तो हमें नरक की यातना बाद में चलकर भोगनी पड़ेगी। यही दंड का
भय हमें धार्मिक नियम के उल्लंघन से रोकता है।
इस प्रकार ये तीनों बाहरी नियम नैतिकता का, मानवीय
आचरण का एक मापदंड बन जाता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया और मनुष्य की बुद्धि
प्रौढ़ होती गयी, ये तीनों नियम सही मापदंड के रूप में मान्य नहीं हो सके। इन्हें नैतिक मापदण्ड
मानने पर कई कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जो निम्नलिखित है —

(1) तीनो बाहरी नियम परिवर्तनशील नियम हैं। सामाजिक नियम भी समय के
अनुसार बदलता रहता है। राजनैतिक नियम भी हर देश और हर राज्य के अलग-अलग होते हैं।
धार्मिक नियम भी हर धर्म के भिन्न-भिन्न होते हैं। इसलिए जो नियम स्वयं ही परिवर्तनशील
हैं, वह नैतिकता जैसे सामान्य नियम का मापदंड कैसे बन सकता है? तब तो एक समाज
में जो उचित होगा वह दूसरे समाज में अनुचित माना जायेगा। और जो एक समाज में अनुचित
होगा, वह दूसरे समाज में उचित होगा। इसलिए परिवर्तनशील सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक
नियम नैतिकता का सही मापदंड नहीं बन सकता।

(2) तीनो नियम बाहरी दबाव जैसा लगता है। हर समाज के डर से, राज्य
के दबाव से और धर्म के दबाव में आकर कोई व्यक्ति आचरण करता है। लेकिन जहाँ बाहरी
दबाव है, वहाँ व्यक्ति की अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं रह जाती और जहाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता
नहीं, वहाँ नैतिकता नहीं हो सकती।

(3) सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक नियम को हम इसलिए
मानते हैं कि तीनों में पारितोषिक का लोभ छिपा हुआ है। लेकिन जहाँ लोभ है वहाँ
नैतिकता नहीं। उसे हम लोभी कह सकते हैं, धूर्त कह सकते हैं, स्वार्थी कह सकते हैं,
लेकिन नैतिक व्यक्ति नहीं कह सकते हैं। पैसे का लोभ, उपाधि का लोभ नैतिक व्यक्ति को
अपने कर्तव्य से नहीं डिगा सकता। इसलिए पारितोषिक के लोभ में आकर किया गया कर्म
नैतिक और उचित नहीं कहा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(4) तीनो नियमों में यह भी कहा गया है कि दंड के भय के कारण हम सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक नियम का उल्लंघन नहीं करते। लेकिन व्यक्ति के डर से झुक जाना ही यदि नैतिकता है तो यह सबसे बड़ी कायरता है। नैतिक व्यक्ति दंड की परवाह नहीं करता। फांसी का तख्ता भी उसे अपने कर्तव्य पथ से डिगा नहीं सकता। लेकिन यदि डर से कोई काम करे तो उसे नैतिक कभी नहीं कहा जा सकता।

(5) तीनो नियमों में यह कहा गया है कि इन नियमों के मानने से कर्म नैतिक होगा और नहीं मानने से कर्म अनैतिक होगा। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि सड़े-गले सामाजिक नियमों को, भ्रष्ट राजनैतिक नियम को और अंधविश्वास पर खड़ा धार्मिक नियम को उखाड़ फेंकना ही हरेक मनुष्य का नैतिक कर्तव्य होगा और उसे आँख मूँद कर मानना ही अनैतिक होगा।

(6) उपरोक्त तीनों नियम हमारे सभी व्यवहारों पर निर्णय नहीं दे सकते हैं। इसलिए यह सही मापदंड हमारे कर्मों के नहीं माने जा सकते।

(7) राजनैतिक अर्थात राज्य के नियम सम्पूर्ण जीवन से संबंध नहीं रखते। जीवन की जटिलताओं के सम्मुख राजकीय नियमों का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। नैतिक निर्णय में व्यक्ति की इच्छा, उसके संकल्प, अभिप्राय आदि पर विचार करना पड़ता है। किन्तु राजकीय नियमों की पहुँच उनकी तह तक नहीं है, इसलिए राजनैतिक नियम नैतिक मापदण्ड बनने के योग्य नहीं है।

(8) राजनैतिक नियम कभी-कभी परस्पर विरोधी बन जाते हैं। राज्य के विभिन्न प्रकार के नियम रहते हैं। इनमें अक्सर विवाद छिड़ा रहता है। ऐसी स्थिति में इन्हें नैतिक मापदंड नहीं माना जा सकता।

(9) नास्तिकों एवं निरीश्वरवादियों के अनुसार ईश्वरीय नियमों को नैतिक मापदंड बताना एक मिथ्या गप है। ये लोग ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते। तभी तो कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफीम की तरह माना है।

(10) विश्व में विविध प्रकार के धर्म पाए जाते हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के ईश्वरीय नियम मिलते हैं। कभी-कभी इनमें आंतरिक विरोध उत्पन्न हो जाता है। इस तरह इनमें मौलिक समरूपता के अभाव में कोई सार्वभौम नैतिक मापदंड नहीं मिल सकता।

ऊपर की आलोचनाओं के आधार पर तीनो बाहरी नियम नैतिकता के सही मापदंड के रूप में स्वीकार नहीं किये जा सके, क्योंकि जैसे-जैसे समय बीतता गया, मनुष्य के सोचने की शक्ति बदली गयी और इन परिवर्तनशील नियमों को, दबाव में डालने वाले नियमों को एवं अंधविश्वास के दल-दल में ढकेलने वाले नियमों को मापदंड के रूप में मानने से मनुष्यों द्वारा इनकार कर दिया गया।

डॉ० रामनारायण शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
जे०एन०एल० कॉलेज, खगौल

दिनांक 28.4.20